



संतान रिपोर्ट

संतान-सुख, संतति योग व उनके भविष्य का विश्लेषण

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:02

॥ पारस वाणी ॥

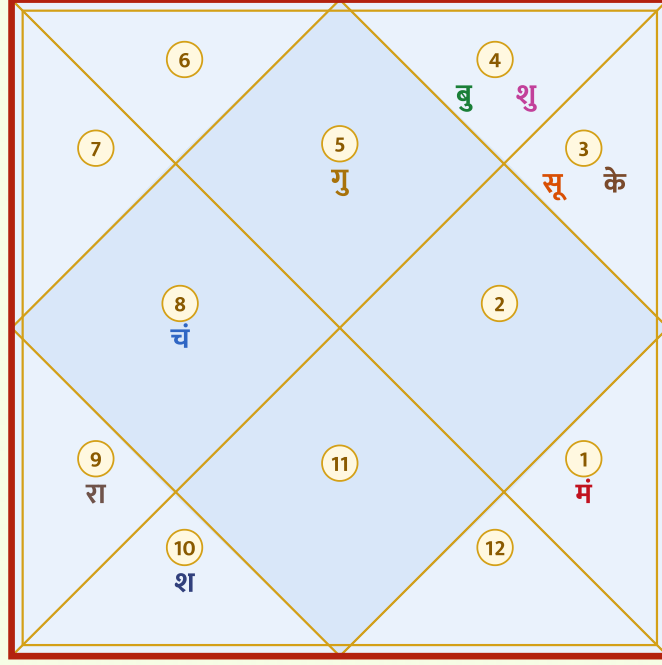
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



संतान-कुंडली परिचय

अ ध्या य 1

संतान-कुंडली परिचय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में संतान के विषय में **गुरु की स्थिति सबसे उत्साहजनक बात है** — वे लग्न में युवा अवस्था में विराजमान हैं और पंचमेश भी वही हैं। संतान-योग की नींव मजबूत है, पर कुछ ग्रह-स्थितियाँ हैं जिन पर ध्यान देना जरूरी है।

पंचम भाव और पंचमेश — संतान की जड़

संतान का मुख्य घर पंचम भाव (पाँचवाँ भाव) होता है। आपकी कुंडली में पंचम भाव **धनु राशि** में है और इसके स्वामी यानी पंचमेश **गुरु** हैं। गुरु आपके **लग्न (भाव 1) में, सिंह राशि में, मित्र राशि में, युवा अवस्था में** बैठे हैं। षड्बल में उनका बल **9.49 रूप** है — न्यूनतम 6.5 की अपेक्षा में यह कहीं अधिक है। **युवा अवस्था में बलवान गुरु का लग्न में होना सबसे शुभ संकेत है** — यह बताता है कि संतान-योग आपकी कुंडली में सुस्पष्ट है।

पंचम भाव में स्वयं कोई ग्रह नहीं बैठा, पर **राहु पंचम भाव को वक्री दृष्टि से देख रहे हैं** — यह संतान के विषय में कभी-कभी देरी या अनिश्चितता का कारण बनता है। साथ ही **सूर्य और केतु की दृष्टि** भी पंचम भाव पर पड़ रही है।

गुरु की दृष्टि — सबसे बड़ा आशीर्वाद

गुरु लग्न से पंचम भाव को सीधे देख रहे हैं (गुरु भाव 1 से भाव 5 पर दृष्टि)। शास्त्र में इसे संतान-प्राप्ति के लिए अत्यंत शुभ माना गया है — पंचमेश का पंचम भाव पर दृष्टि डालना, यह दोहरी कृपा है। **गजकेसरी योग** भी आपकी कुंडली में बन रहा है (चंद्र से केंद्र में गुरु), जो यश, बुद्धि और सुख का संकेत देता है — इसका प्रभाव संतान-सुख पर भी पड़ता है।

सप्तमांश (D7) — संतान का सूक्ष्म दर्पण

संतान के विषय में सप्तमांश कुंडली (D7) को देखना अनिवार्य है। आपकी D7 में **लग्न धनु है, और गुरु स्वयं धनु के भाव 1 में बैठे हैं** — यह अत्यंत बलशाली स्थिति है। साथ में **सूर्य और शनि भी लग्न में** हैं। यह त्रिग्रही योग D7 में संतान-भाव को सशक्त बनाता है। **D7 में गुरु का लग्न में होना यह पुष्टि करता है कि संतान-योग वास्तविक और स्थायी है।** हाँ, D7 में चंद्र भाव 12 में हैं — यह माता के मन में संतान

को लेकर कभी-कभी अनिश्चितता या प्रतीक्षा का भाव सूचित करता है।

राहु का प्रभाव — देरी पर ध्यान दें

पंचम भाव पर **राहु की दृष्टि** (राहु भाव 5 से भाव 9, 11, 1 देखते हैं — और जन्म-कुंडली में राहु भाव 5 में ही बैठे हैं, धनु राशि में) — यह स्थिति थोड़ी जटिल है। राहु पंचम में होने से **संतान में देरी, या संतान को लेकर मन में अनिश्चितता** हो सकती है। यह कोई रुकावट नहीं, बल्कि यह बताता है कि **सब्र और सही समय पर ध्यान देना ज़रूरी है**।

मुख्य बातें

- पंचमेश गुरु बलवान व युवा अवस्था में हैं — संतान-योग की नींव ठोस है
- D7 में गुरु का लग्न में होना संतान-योग की पुष्टि करता है
- राहु का पंचम भाव में होना देरी या प्रतीक्षा का संकेत दे सकता है — घबराने की बात नहीं
- गजकेसरी योग संतान के भविष्य को यशस्वी बनाने का संकेत देता है
- आपकी आयु अभी 34 वर्ष है — समय पूर्णतः अनुकूल है; आगे के अध्यायों में दशा व गोचर से सटीक समय देखेंगे

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

गजकेसरीसञ्जातस्तेजस्वी धनवान् भवेत् ।

मेधावी गुणसम्पन्नो राजप्रियकरो नरः ॥

गजकेसरी योग में जन्मा व्यक्ति तेजस्वी और धनवान होता है, बुद्धिमान और गुणों से भरा — तथा बड़े लोगों का प्रिय बनता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ३६



संतान योग व पंचम भाव

अ ध्या य 2

संतान योग व पंचम भाव

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में संतान का भाव — यानी पंचम भाव — अपने सबसे बड़े मित्र की देखरेख में है। **पंचमेश गुरु लग्न में विराजमान हैं, और वही संतान के नैसर्गिक कारक भी हैं** — यह एक दुर्लभ और बलवान स्थिति है। यह योग कहता है कि संतान का

सुख आपके जीवन में लिखा है, और उस पर आपके व्यक्तित्व की छाप भी गहरी होगी।

पंचम भाव और उसका स्वामी — नींव कितनी पक्की है?

आपकी सिंह लग्न कुंडली में पाँचवाँ भाव धनु राशि का है। धनु — गुरु की स्वराशि। और पंचमेश गुरु स्वयं लग्न में, सिंह राशि में, मित्र राशि में विराजमान हैं। **षड्बल की गणना में गुरु का बल 9.49 रूप है — न्यूनतम से डेढ़ गुना अधिक — और अवस्था युवा है**, जिसका अर्थ है पूरा फल देने की स्थिति में।

लग्न में बैठा पंचमेश सीधे यह कहता है: संतान और आपका स्वयं का जीवन एक-दूसरे से गहरे जुड़े हैं। आप जैसे-जैसे स्वयं बढ़ेंगे, संतान का भाग्य भी उसी के साथ खुलेगा।

पंचम भाव के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु 5 हैं — औसत के आसपास। इसका अर्थ है कि योग तो प्रबल है, पर घटना का समय थोड़ा इंतजार माँग सकता है। जल्दबाजी से अधिक, धैर्य यहाँ काम का है।

राहु पंचम में — यह रुकावट नहीं, एक विशेष परीक्षा है

पंचम भाव में राहु वक्री है — यह इस कुंडली की सबसे ध्यान देने वाली स्थिति है। राहु पंचम में होने पर **संतान-विषय में देर, उलझन या अनिश्चितता** का भाव आता है — पर यह दरवाज़ा बंद नहीं करता, बस उसे ज़रा भारी बना देता है।

यहाँ एक बात और जोड़ती हूँ — **गुरु की दृष्टि सीधे पंचम भाव पर पड़ रही है**। लग्न में बैठे गुरु की पाँचवें भाव पर दृष्टि — यह राहु के प्रभाव को बहुत हद तक संतुलित करती है। शास्त्र में इस स्थिति के लिए कहा गया है कि जहाँ गुरु की दृष्टि हो, वहाँ राहु का अनिष्ट घटता है।

सूर्य की दृष्टि भी पंचम भाव पर है — भाव 11 से। पर सूर्य अभी मृत अवस्था में हैं, इसलिए यह दृष्टि शुभ संकेत तो देती है, पर उसका बल सीमित है।

केतु की दृष्टि भी पंचम पर है (भाव 11 से)। केतु और राहु दोनों का पंचम भाव से गहरा सम्बंध — यह कभी-कभी विलंब या असामान्य परिस्थिति का सूचक होता है। पर गुरु की उपस्थिति इन सबके बीच एक मज़बूत रक्षक की तरह खड़े हैं।

सप्तमांश (D7) — संतान की असली गहराई यहाँ दिखती है

संतान के विषय में D7 (सप्तमांश) को देखना अनिवार्य है। **D7 में गुरु लग्न (धनु) में ही स्थित हैं** — लग्नेश और संतान-कारक एक ही

स्थान पर, यह अत्यंत शुभ योग है। इसका संदेश स्पष्ट है: संतान का सुख आपकी कुंडली में बाधित नहीं है।

D7 में शुक्र और राहु दूसरे भाव (मकर) में हैं — यह कभी-कभी संतान-विषय में आर्थिक दबाव या थोड़ी उलझन दे सकता है, पर गुरु का लग्न में होना इसे सँभाले रखता है।

D7 में चंद्र बारहवें भाव में हैं — मन में संतान को लेकर चिंता या अधूरापन महसूस हो सकता है, पर यह भाव का संकेत है, तथ्य नहीं।

समय — कब और कैसे?

यह प्रश्न सबसे स्वाभाविक है। आप अभी 34 वर्ष के हैं।

अभी सूर्य महादशा-शनि अंतर्दशा चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक)। शनि छठे भाव में स्वराशि में वक्री हैं। यह अंतर्दशा संतान के लिए तत्काल अनुकूल नहीं — शनि और छठे भाव का सम्बंध प्रयास व प्रतीक्षा माँगता है।

फ़रवरी 2027 में सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी। बुध आपके बारहवें भाव में हैं, पर वे पंचम के मित्र हो सकते हैं — यह अवधि मिश्रित रहेगी।

सबसे महत्वपूर्ण मोड़ अप्रैल 2029 में आएगा — चंद्र महादशा का आरंभ। चंद्र आपके चतुर्थ भाव में हैं और बारहवें के भावेश भी। चंद्र महादशा (2029-2039) में मन, घर और परिवार के विषय खुलते हैं। **यह दशा संतान के लिए कुंडली की सबसे अनुकूल अवधि बन सकती है — उस समय आप 37 वर्ष के होंगे।**

गोचर में अभी गुरु कर्क राशि में हैं — लग्न से बारहवें भाव में। यह संतान के लिए तत्काल शुभ संकेत नहीं देता। **अक्टूबर 2026 के बाद गुरु सिंह राशि में आएँगे — आपके लग्न में — और तब गुरु गोचर अत्यंत बलवान होगा।** उस समय से लेकर 2027 तक का समय संतान के विषय में अधिक अनुकूल रहेगा।

मुख्य बातें

- **पंचमेश गुरु लग्न में, युवा अवस्था में, भरपूर बल के साथ** — संतान का योग मूलतः पक्का है।
- पंचम भाव में राहु हैं, पर **गुरु की सीधी दृष्टि उस भाव पर** उनके प्रभाव को संतुलित करती है।
- **D7 में गुरु धनु लग्न में** — संतान की वर्ग-कुंडली में यह सर्वश्रेष्ठ स्थिति है।
- अभी की शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 तक) प्रतीक्षा का समय है — घबराहट का नहीं।
- **अक्टूबर 2026 के बाद गुरु का सिंह गोचर और अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा** — ये दो पड़ाव इस विषय में सबसे आशाजनक हैं।

पुत्रस्थानाधिपे स्वोच्चे लग्नाद्वा द्वित्रिकोणगे ।
गुरुणा संयुते दृष्टे पुत्रभाग्यमुपैति सः ॥

पंचम भाव का स्वामी उच्च का हो या लग्न से त्रिकोण में हो, और उस पर गुरु की युति या दृष्टि हो — तो संतान का सौभाग्य मिलता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १६



संतान-प्राप्ति का समय

अ ध्या य 3

संतान-प्राप्ति का समय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में संतान-प्राप्ति का योग स्पष्ट है — **गुरु लग्न में युवा अवस्था में बैठे हैं और पंचम भाव पर उनकी सीधी दृष्टि है।** समय की दृष्टि से कुछ पड़ाव ऐसे हैं जो इस सुख के निकट लाते हैं, और उन्हें समझना ज़रूरी है।

पंचम भाव पर दृष्टियाँ — कौन बाधक, कौन सहायक

आपका पंचम भाव धनु राशि में है। इस भाव पर इस समय **तीन ग्रहों की दृष्टि** पड़ रही है:

- **गुरु** (पंचमेश और संतान-कारक, दोनों) की पंचम पर दृष्टि — यह सबसे शुभ संकेत है। गुरु लग्न में बैठे हैं, युवा अवस्था में हैं, और सातवें, पाँचवें तथा नवें भाव को देखते हैं।
- **सूर्य** की भी पंचम भाव पर दृष्टि है — सूर्य ग्यारहवें भाव में हैं।
- **केतु** की पंचम और सातवें भाव पर दृष्टि है — केतु ग्यारहवें भाव में बैठे हैं।
- **राहु** पंचम भाव में स्वयं विराजमान हैं — यह एक महत्वपूर्ण बात है जो संतान के समय में कुछ अनिश्चितता या देरी ला सकती है, पर योग को नष्ट नहीं करती।

राहु का पंचम में होना कभी-कभी संतान में विलंब या असामान्य परिस्थितियाँ लाता है — पर जब गुरु स्वयं पंचम को देख रहे हों और नवांश में भी बलवान हों (D9 में गुरु कन्या लग्न में हैं), तो राहु की बाधा टूट जाती है। **यह योग बताता है कि संतान होगी — बस धैर्य रखना होगा।**

सप्तमांश (D7) — संतान की गहरी जाँच

सप्तमांश कुंडली में गुरु और शनि, दोनों धनु लग्न (प्रथम भाव) में बैठे हैं। गुरु का D7 के लग्न में होना बहुत शुभ है — संतान का सुख जीवन में अवश्य आएगा। साथ में सूर्य भी D7 के प्रथम भाव में हैं। यह तीन ग्रहों का एकत्रित बल संतान-सुख की पुष्टि करता है।

हाँ, चंद्र D7 के बारहवें भाव में हैं — यह माँ और शिशु के बीच भावनात्मक जुड़ाव में कभी-कभी थोड़ी जटिलता ला सकता है, या गर्भावस्था में मन को थोड़ा भारी रख सकता है — पर यह बाधा नहीं, केवल सावधानी का संकेत है।

दशा का पड़ाव — "कब" का उत्तर

अभी सूर्य महादशा-शनि अंतर्दशा चल रही है, जो फ़रवरी 2027 तक रहेगी। शनि आपके छठे भाव में स्वराशि में बैठे हैं — यह दशा करियर और दायित्व की है, संतान की सीधी दशा नहीं।

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आरंभ होगी — बुध बारहवें भाव में हैं, शत्रु राशि में। यह भी मुख्यतः संतान-सुख की अंतर्दशा नहीं कही जाएगी।

दिसम्बर 2027 से सूर्य-केतु अंतर्दशा आएगी — केतु ग्यारहवें भाव में हैं और पंचम पर दृष्टि डालते हैं। पंचम पर केतु की दृष्टि और पंचम में राहु — यह संयोग पुरानी इच्छाओं को पूरा कर सकता है।

अप्रैल 2028 से सूर्य-शुक्र अंतर्दशा — और इसके बाद अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा आरंभ होगी। चंद्र महादशा संतान-सुख के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि है — चंद्र आपके चौथे भाव में हैं और चंद्र की महादशा मन, घर और परिवार को केंद्र में लाती है। इस दशा में गुरु की अंतर्दशा (जो चंद्र महादशा में भी आएगी) संतान के लिए सबसे अनुकूल खिड़की होगी।

मिश्रित संकेत यह कहते हैं: 2027-2028 का काल प्रयास और तैयारी का है; 2028-2030 का काल संतान-सुख के सबसे अनुकूल वर्ष हैं। तब आपकी आयु 36-38 वर्ष होगी — यह समय जीवन के उस पड़ाव पर है जब ज़िम्मेदारी और परिपक्वता दोनों साथ होते हैं।

गोचर में गुरु अक्टूबर 2026 के बाद सिंह राशि में आएँगे — आपके लग्न में। लग्न में गुरु का गोचर, जहाँ जन्म में भी गुरु बैठे हैं, संतान-भाव को बल देता है।

मुख्य बातें

- पंचमेश गुरु युवा अवस्था में और पंचम पर दृष्टि — संतान-योग पुख्ता है, राहु केवल थोड़ी देरी का संकेत।
- सप्तमांश में गुरु + शनि + सूर्य का D7 लग्न में होना — संतान-सुख की पुष्टि करता है।
- 2028 से 2030 का काल सबसे अनुकूल — सूर्य-शुक्र अंतर्दशा और चंद्र महादशा का आरंभ।

- गुरु का लग्न-गोचर (अक्टूबर 2026 के बाद) — इस काल में संतान-प्रयास शुभ रहेगा।
- राहु की पंचम-स्थिति डर का कारण नहीं — गुरु की दृष्टि उसे संतुलित करती है; बस धैर्य और स्वास्थ्य-ध्यान ज़रूरी है।



संतान का स्वभाव व भविष्य

अ ध्या य 4

संतान का स्वभाव व भविष्य

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली जो संतान का चित्र सामने रखती है, वह एक ऐसे बच्चे का है जो साधारण नहीं होगा — जिसमें बुद्धि की गहराई भी होगी और मन की कोमलता भी। पंचमेश गुरु लग्न में युवा अवस्था में विराजमान हैं, और यही आपकी संतान के स्वभाव की सबसे बड़ी नींव है।

बुद्धि व स्वभाव — गुरु की छाप

पंचमेश गुरु लग्न (सिंह राशि) में हैं, और अवस्था युवा है — इसका अर्थ है कि वे अपना पूरा फल देने में सक्षम हैं। सिंह राशि में गुरु बच्चे को एक स्वाभाविक नेतृत्व-गुण देते हैं — यह संतान किसी की देखादेखी नहीं चलेगी, अपना रास्ता खुद चुनेगी। ऐसे बच्चे शिक्षकों से सवाल पूछते हैं, रटने में विश्वास नहीं करते, समझकर आगे बढ़ते हैं।

सप्तमांश (D7) में — जो विशेष रूप से संतान का वर्ग-कुंडली है — गुरु लग्न (धनु राशि) में ही बैठे हैं। लग्न में गुरु का यह दोहरापन बताता है कि संतान में ज्ञान की प्यास जन्मजात होगी। धनु लग्न के गुरु स्वतंत्र सोच, धर्म-भावना और दार्शनिक झुकाव का संकेत हैं — यह बच्चा बड़ा होकर "क्यों" पूछने वाला होगा।

मन व भावनाएँ — राहु की उपस्थिति

पंचम भाव (धनु) में राहु वक्री है, और उन पर सूर्य की दृष्टि, गुरु की दृष्टि व केतु की दृष्टि भी है। राहु का पंचम में होना बताता है कि संतान का मन थोड़ा जटिल और गहरा होगा — बाहर से शांत, पर भीतर से बहुत कुछ सोचने वाला।

ऐसे बच्चे अपनी भावनाएँ आसानी से नहीं कहते, पर महसूस बहुत तीव्रता से करते हैं। वे एकांत में समय बिताना पसंद करते हैं, भीड़ से थोड़ा अलग रहते हैं। माता-पिता को यह समझना होगा कि यह दूरी उदासी नहीं, बल्कि उनकी अपनी दुनिया में डूबे रहने की प्रवृत्ति है। राहु की यह स्थिति रचनात्मकता भी देती है — संगीत, कला, लेखन या किसी असामान्य क्षेत्र में रुचि संभव है।

शिक्षा व कर्म-क्षेत्र — भविष्य का रंग

सप्तमांश में बुध छोटे भाव (वृषभ) में हैं — यह दर्शाता है कि संतान का रास्ता परिश्रम और प्रतिस्पर्धा से होकर जाएगा, सब कुछ आसानी से नहीं मिलेगा। पर जो मिलेगा वह पक्का होगा। वृषभ राशि के प्रभाव से व्यावहारिकता भी रहेगी — यह बच्चा सपने देखेगा, पर उन्हें ज़मीन पर उतारना भी जानेगा।

गुरु का सप्तमांश लग्न में होना और D10 (दशमांश) में मंगल का ग्यारहवें भाव में होना — दोनों मिलकर बताते हैं कि संतान का कर्म-क्षेत्र विस्तृत होगा। शिक्षा, कानून, दर्शन, चिकित्सा या प्रशासन — किसी भी ऐसे क्षेत्र में जहाँ ज्ञान और मानवीय संवेदना दोनों काम आएँ, वहाँ यह संतान नाम करेगी।

आपसे रिश्ता — संतान और अभय शर्मा जी

पंचमेश गुरु आपके लग्न में हैं — यानी संतान और आप के बीच का बंधन असाधारण रूप से गहरा होगा। **यह बच्चा केवल आपकी संतान नहीं, एक तरह से आपका सबसे बड़ा शिक्षक भी बनेगा।** गुरु की युवा अवस्था यह भी कहती है कि इस रिश्ते में आप दोनों साथ-साथ बढ़ेंगे — आप उसे सिखाएँगे, वह आपको नई दृष्टि देगा।

एक बात ध्यान रखें — राहु के कारण यह संतान थोड़ी ज़िद्दी भी हो सकती है और अपनी राह से आसानी से नहीं हटेगी। इस ज़िद को दबाइए मत, उसे सही दिशा दीजिए — तो यही ज़िद उसकी सबसे बड़ी ताकत बन जाएगी।

मुख्य बातें

- **पंचमेश गुरु लग्न में युवा अवस्था में** — संतान बुद्धिमान, स्वतंत्र विचार वाली और स्वाभाविक नेतृत्व-क्षमता से युक्त होगी।
- **सप्तमांश में भी गुरु लग्न में** — ज्ञान की प्यास जन्मजात होगी, शिक्षा-क्षेत्र में विशेष प्रदर्शन संभव।
- **पंचम में राहु** — मन गहरा व जटिल, रचनात्मकता प्रबल; भावनाएँ तीव्र पर व्यक्त करने में समय लगेगा।
- **परिश्रम से सफलता** — सब कुछ आसानी से नहीं, पर जो मिलेगा वह टिकाऊ होगा।
- **आपसे गहरा आत्मीय बंधन** — यह संतान आपके जीवन को नया अर्थ देगी।



संतान से संबंध व सुख

अ ध्या य 5

आपकी कुंडली में संतान से संबंध का प्रश्न केवल "होगी या नहीं" तक नहीं है — यह उस बंधन की गहराई का प्रश्न है जो आपको और आपकी संतान को जीवन भर जोड़े रखेगा। पंचमेश गुरु लग्न (सिंह) में युवा अवस्था में विराजमान हैं, और लग्न स्वयं व्यक्तित्व का केंद्र है

— इसका अर्थ है कि संतान आपके अस्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा बनेगी, एक अलग रिश्ता नहीं।

संतान से भावनात्मक जुड़ाव — गहरा पर कभी-कभी भारी

गुरु लग्न में होने से आप स्वभाव से ही संतान के प्रति बहुत संवेदनशील और समर्पित माता-पिता बनेंगे। आप उनके हर सुख-दुख को अपने भीतर महसूस करेंगे। पर यहाँ एक बारीक बात है — पंचम भाव में राहु वक्री हैं। राहु वहाँ हों जहाँ गुरु का कारकत्व हो, तो संतान के प्रति अपेक्षाएँ कभी-कभी इतनी गहरी हो जाती हैं कि दोनों तरफ़ से दबाव बनता है। **आपकी भावना सच्ची होगी, पर उसे थोड़ा हल्का रखना ज़रूरी होगा — प्रेम और नियंत्रण में फ़र्क़ रखना।**

चंद्र चतुर्थ भाव में हैं और नीच के हैं — मन भावनाओं में जल्दी डूब जाता है। इसलिए यदि संतान कभी आपकी इच्छा के विपरीत चले, तो मन पर असर जल्दी पड़ेगा। यह कोई कमज़ोरी नहीं — यह उस प्रेम की निशानी है जो आप भीतर रखते हैं।

पिता-पुत्र (या माता-संतान) का रिश्ता — गुरु की भूमिका

गुरु इस कुंडली में सबसे बलवान ग्रह हैं — युवा अवस्था, भरपूर बल, लग्न में विराजमान। इसका सुंदर अर्थ यह है कि आप संतान के लिए एक सच्चे मार्गदर्शक बनेंगे। न केवल माँ-बाप, बल्कि एक गुरु की भूमिका भी निभाएँगे। संतान आपसे सीखेगी — मूल्य, विचार, दृष्टिकोण।

गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर भी पड़ रही है, जो जीवनसाथी का भाव है। इससे संकेत मिलता है कि **संतान के विषय में आप और आपके जीवनसाथी के बीच तालमेल रहेगा — निर्णय मिलकर होंगे, एकतरफ़ा नहीं।**

सप्तमांश (D7) — संतान से संबंध की असली परीक्षा

सप्तमांश कुंडली संतान-सुख की गहराई बताती है। D7 में गुरु लग्न (धनु) में ही हैं — यह अत्यंत शुभ स्थिति है। **इसका अर्थ है कि संतान के साथ संबंध जीवन की सबसे बड़ी शक्ति बनेगा।** D7 में शनि भी लग्न में हैं — यह दर्शाता है कि इस रिश्ते में धैर्य और अनुशासन दोनों की ज़रूरत पड़ेगी। संतान शायद तुरंत वह सब न कहे जो आप सुनना चाहते हों, पर समय के साथ रिश्ता पक्का होता जाएगा।

अभी का समय — शनि अंतर्दशा का संदेश

इस समय सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक चल रही है। शनि षष्ठ भाव में स्वराशि में हैं। **यह दौर रिश्तों में धैर्य**

माँगता है। शनि की दृष्टि द्वादश भाव पर भी है — मन कभी-कभी अंदर से थका हुआ रह सकता है। ऐसे में संतान के साथ समय बिताना, उनके साथ बैठना, यही सबसे बड़ा उपाय है।

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आरंभ होगी, और गोचर में गुरु वृश्चिक राशि में आएँगे — तब संतान से संबंध में एक नई मिठास आने की संभावना है।

मुख्य बातें

- **गुरु लग्न में युवा अवस्था में** — आप संतान के सच्चे मार्गदर्शक बनेंगे, यह रिश्ता जीवन की धुरी रहेगा।
- पंचम में राहु के कारण **अपेक्षाओं को थोड़ा हल्का रखना** ज़रूरी होगा — प्रेम और नियंत्रण में सीमा रखें।
- D7 में गुरु लग्न में — **संतान से संबंध जीवन की सबसे बड़ी शक्ति बनेगा**, समय के साथ और गहरा होगा।
- अभी शनि अंतर्दशा में **धैर्य रखें** — फ़रवरी 2027 के बाद रिश्ते में नई ऊर्जा आएगी।
- **जितना समय संतान को देंगे, उतना यह रिश्ता खिलेगा** — गुरु का यही संदेश है।



संभावित बाधाएँ व समाधान

अ ध्या य 6

अभय शर्मा जी, संतान-सुख का मार्ग आपकी कुंडली में लिखा है — पर कुछ ग्रह-स्थितियाँ बीच में आकर खड़ी हो जाती हैं। इन्हें जानना ज़रूरी है, क्योंकि जो बाधा दिखती है वही सबसे पहले हटाई जा सकती है।

राहु का पंचम भाव में होना — सबसे बड़ी पहेली

राहु पंचम भाव (धनु राशि) में वक्री हैं — और यही इस कुंडली की सबसे बड़ी संतान-बाधा है। राहु का स्वभाव है धुंध और भटकाव — पंचम में रहते हुए वे संतान की दिशा में अनिश्चितता, देरी या अप्रत्याशित उलझनें ला सकते हैं। गोचर में भी **शनि अभी आपके आठवें भाव में वक्री हैं** — आठवाँ भाव बाधा और रुकावट का है। यह दोनों मिलकर इस समय धीरज की माँग कर रहे हैं।

साथ ही, **सूर्य की दृष्टि पंचम भाव पर है** — सूर्य इस कुंडली में मृत अवस्था में हैं, इसलिए यह दृष्टि बल देने के बजाय पंचम भाव को थोड़ा दबाती है। केतु की दृष्टि भी पंचम पर है — जो अनिश्चितता को और बढ़ाती है।

गुरु — बली हैं, पर गोचर में अभी बारहवें भाव में

पंचमेश गुरु आपके लग्न में युवा अवस्था में हैं — यह बड़ी शक्ति है। **पर गोचर के गुरु अभी कर्क राशि में हैं, जो आपके जन्म-लग्न से**

बारहवाँ भाव है। बारहवाँ भाव व्यय और एकांत का है — इसलिए इस समय गुरु की शक्ति बाहर नहीं, भीतर काम कर रही है। नवम्बर 2026 के बाद जब **गुरु सिंह राशि में आएँगे — यानी आपके पहले भाव में** — तब स्थिति सीधे बदलेगी, क्योंकि वे पंचम भाव पर अपनी नौवीं दृष्टि डालेंगे।

शुक्र और बुध — बारहवें भाव में, अस्त भी

शुक्र बारहवें भाव में अस्त हैं — शुक्र संतान के लिए भी महत्वपूर्ण हैं (दाम्पत्य सुख व सृजन-शक्ति के कारक)। अस्त अवस्था में उनका बल नगण्य है। यह दाम्पत्य में सामंजस्य की कमी के रूप में प्रकट हो सकता है, जो परोक्ष रूप से संतान-योजना को प्रभावित करती है।
वर्तमान अंतर्दशा शनि की है — और शनि छठे भाव में स्वराशि में हैं, जो बाधाओं को लंबा खींचते हैं।

समाधान — आपकी कुंडली से निकले, आपके लिए

पहली बात — गुरु के साथ चलें। गुरु आपके पंचमेश हैं और लग्न में युवा हैं। इनका उपाय सबसे सीधा है — प्रतिदिन किसी को कुछ सिखाएँ, चाहे छोटी बात हो। ज्ञान का प्रवाह गुरु को प्रसन्न करता है।

दूसरी बात — राहु की बेचैनी को शांत करें। राहु पंचम में हैं। इनके लिए रोज़ थोड़ी देर मौन बैठें — स्क्रीन से दूर, बिना कुछ सोचे। यह भीतर की उलझन घटाता है।

तीसरी बात — शुक्र की अस्त अवस्था। दाम्पत्य में छोटी-छोटी मिठास डालें — यही शुक्र का असली उपाय है। शुक्रवार को घर में कुछ सुंदर लाएँ, साथ बैठकर खाएँ।

चौथी बात — फ़रवरी 2027 के बाद बुध की अंतर्दशा आएगी। बुध बारहवें भाव में हैं, इसलिए यह अंतर्दशा भी शर्त के साथ फल देगी — पर नवम्बर 2026 से गुरु का पहले भाव में आना इस समय को सँभाल लेगा।

मुख्य बातें

- **राहु पंचम में और वक्री शनि आठवें में** — यही दो इस समय की मुख्य बाधाएँ हैं
- गोचर गुरु नवम्बर 2026 से पहले भाव में आएँगे — **यही सबसे बड़ा बदलाव का क्षण है**
- शुक्र की अस्त अवस्था दाम्पत्य-स्तर पर काम माँगती है — यह सीधे संतान-योजना से जुड़ा है
- बाधाएँ स्थायी नहीं हैं — दशा और गोचर दोनों बदल रहे हैं
- धैर्य और दिशा — ये दो चीज़ें अभी सबसे ज़रूरी हैं, घबराहट नहीं



संतान-सुख हेतु उपाय

अध्याय 7

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में संतान का मार्ग खुला है — पर इस सुख को पाने के लिए जो ग्रह सबसे अधिक आपका साथ माँग रहे हैं, वे हैं **गुरु और मंगल**। गुरु पंचमेश भी हैं और संतान के नैसर्गिक कारक भी; मंगल भाव 9 में स्वराशि में बैठकर पंचम भाव को सीधे देख रहे हैं। इन दोनों को साधना ही इस अध्याय का सार है।

गुरु को जीवन में उतारें — यही सबसे बड़ा उपाय

गुरु लग्न (सिंह) में युवा अवस्था में हैं — बल भरपूर है, और पंचमेश भी वही हैं। इसका अर्थ है कि जब आपके भीतर गुरु का स्वभाव जागता है — सिखाना, विनम्रता, सत्य — तब संतान-भाव को सबसे अधिक बल मिलता है।

- **रोज़ कुछ पढ़ें, और किसी को कुछ सिखाएँ** — चाहे एक बच्चे को एक घंटे गणित ही क्यों न पढ़ाएँ। यह केवल सामाजिक काम नहीं, यह गुरु को सक्रिय करना है।
- बड़ों का — विशेषकर माता-पिता और गुरुजनों का — आदर करें। गुरु जहाँ कृतज्ञता देखते हैं, वहाँ फल देते हैं।
- गुरुवार को केले का वृक्ष लगाएँ या उसे जल दें। पीला अन्न — चने की दाल, हल्दी — किसी ज़रूरतमंद को दान करें।

मंगल को शरीर में उतारें — ऊर्जा ही उपाय है

मंगल भाव 9 में स्वराशि मेष में हैं और पंचम भाव पर दृष्टि है — यानी संतान-भाव का संरक्षण इन्हीं से है। पर मंगल की अवस्था मृत है, इसलिए **शारीरिक सक्रियता इन्हें जगाने का सबसे पक्का तरीका है।**

- रोज़ सुबह कम से कम 30 मिनट शरीर को थकाएँ — दौड़, तेज़ चाल, योग या व्यायाम।
- मंगलवार को लाल मसूर की दाल दान करें।
- किसी भी विवाद में अनावश्यक क्रोध न करें — मंगल की ऊर्जा जब भीतर भटकती है, तब वह जोड़ों में तनाव और संबंधों में कड़वाहट बनती है।

राहु की उलझन को ध्यान से काटें

पंचम भाव में राहु वक्री हैं — यही सबसे बड़ी पहेली है। राहु का स्वभाव है भ्रम, अधीरता और बाहरी शोर। इनका उपाय केवल एक है — **मन को एकाग्र करना।**

- **रोज़ 10-15 मिनट मौन में बैठें** — ध्यान, प्राणायाम या केवल शांत बैठना। यह केतु-राहु दोनों को सधाता है।
- किसी दूसरे के जीवन से तुलना बंद करें — राहु तुलना और असंतोष से और बिगड़ता है।

- शनिवार को कुत्ते को रोटी दें।

माणिक — इस समय का रत्न

सूर्य महादशा चल रही है और सूर्य आपके जीवन-रत्न माणिक के स्वामी भी हैं। **माणिक इस समय विशेष रूप से अनुकूल है** — यह लग्न को बल देता है और पंचमेश गुरु को भी अप्रत्यक्ष सहारा मिलता है। इसे रविवार की सुबह ताँबे की अँगूठी में दाहिने हाथ की अनामिका में धारण करें।

मुख्य बातें

- **गुरु को सक्रिय करें** — पढ़ना, सिखाना, बड़ों का आदर; गुरुवार को दान।
- **मंगल को जगाएँ** — रोज़ शारीरिक परिश्रम, मंगलवार को लाल मसूर-दान।
- **राहु को शांत करें** — रोज़ 10-15 मिनट का मौन व ध्यान।
- **माणिक** — सूर्य महादशा में यही रत्न अभी सबसे उपयुक्त है।
- उपाय नियमित हों, एकबारगी नहीं — गुरु धीरे पर पक्का फल देते हैं।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ संतान रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।